REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

भारतीय राष्ट्रीयता में बाबा साहब अंबेडकर की भूमिका

डॉ. पिंकी
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग हिन्दू गर्ल्स कॉलेज जगाधरी हरियाणा.

सारांश

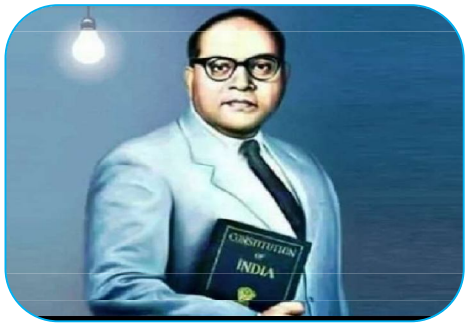

बी.आर. अंबेडकर एक प्रमुख कार्यकर्ता और समाज सुधारक थे जिन्होंने अपना जीवन दलितों और भारत के सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। दबे-कुचले लोगों के लिए एक मसीहा के रूप में उन्होंने जातिगत भेदभाव के उन्मूलन के लिए लगातार संघर्ष किया जिसने भारतीय समाज को विखंडित और कमजोर बना दिया था। सामाजिक रूप से पिछड़े परिवार में जन्मे अंबेडकर जातिगत भेदभाव असमानता और पूर्वाग्रह का शिकार थे। हालांकि सभी बाधाओं का सामना करते हुए उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और इस प्रकार उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले अछूत बन गए। अपनी पढ़ाई पूरी करने के तुरंत बाद उन्होंने खुद को राजनीति में झोंक दिया और समाज में प्रचलित असमानता और दबे कुचले वर्ग के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। वह सामाजिक समानता और न्याय के पक्षधर थे। एक विधिवेत्ता के रूप में शिक्षित अंबेडकर स्वतंत्र भारत के पहले विधि मंत्री और भारतीय संविधान के निर्माता या मुख्य वास्तुकार बने। अपने बाद के वर्षों में उन्होंने बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान करने वाले के रूप में कार्य किया और जातिगत भेदभाव और हिंदुओंद्वारा प्रचलित अन्याय से खुद को मुक्त करने के लिए इस धर्म को अपना लिया।

परिचय

भीमराव रामजी अंबेडकर का जन्म रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर मध्य भारत के केंद्रीय प्रांत में हुआ था। उनके पिता भारतीय सेना में सेवा करते थे। वह अपने माता-पिता की चौदह संतानों में सबसे छोटे थे। महार जाति से संबंधित जिसे अछूत माना जाता था उनका परिवार सामाजिक और आर्थिक भेदभाव का शिकार हुआ। हालांकि सेना के बच्चों को मिलने वाली विशेष सुविधाओं के कारण उन्होंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की।

युवा अंबेडकर ने शिक्षा ग्रहण करते समय कई समस्याओं का सामना किया लेकिन उन्होंने सभी बाधाओं को पार कर लिया। 1897 में वह अपने परिवार के साथ बंबई (मुंबई चले गए जहां उन्होंने एल्फिन्स्टन हाई स्कूल में दाखिला लिया और उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले अछूत बने। 1907 में मैट्रिक पास करने के बाद उन्होंने 1908 में एल्फिन्स्टन कॉलेज में दाखिला

लिया और फिर से इतिहास रचते हुए विश्वविद्यालय में प्रवेश करने वाले पहले अछूत बने। उन्होंने 1912 में अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

उन्हें बड़ौदा राज्य सरकार में नौकरी मिली लेकिन जल्द ही उन्होंने इसे छोड़ दिया क्योंकि उन्हें बड़ौदा राज्य छात्रवृत्ति प्राप्त हुई जिसने उन्हें न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। 1913 में अमेरिका जाकर उन्होंने जून 1915 में अर्थशास्त्र में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। इसके साथ ही समाजशास्त्र इतिहास दर्शनशास्त्र और मानवशास्त्र उनके अध्ययन के विषय थे। दो साल बाद उन्होंने अर्थशास्त्र में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की।

1916 में उन्होंने ग्रे'ज इन में बार पाठ्यक्रम के लिए दाखिला लिया। हालांकि छात्रवृत्ति समाप्त होने के कारण उन्हें 1917 में भारत लौटना पड़ा। यहां उन्हें अपने अछूत होने का अहसास फिर से हुआ जो विदेश में अध्ययन के दौरान नहीं हुआ था। जब उन्हें मुंबई के सिडेनहम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स में प्रोफेसर नियुक्त किया गया तो अन्य संकाय सदस्यों ने उनके सामुदायिक पानी के घड़े के उपयोग पर आपत्ति जताई।

इसी समय उन्होंने दलित अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से अभियान शुरू किया। 1919 में उन्होंने ब्रिटिश सरकार के सामने अछूतों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए अलग निर्वाचन और आरक्षित सीटों के पक्ष में साक्ष्य प्रस्तुत किया। 1920 में उन्होंने एक साप्ताहिक मराठी पत्रिका शुरू की जिसमें जातिगत भेदभाव की कड़ी आलोचना की गई और दलित जागृति तथा असमानता के खिलाफ संघर्ष का आह्वान किया गया।

1923 तक अंबेडकर के पास एम.ए., पीएच.डी. (कोलंबिया अमेरिका एम.एससी. डी.एससी. (लंदन विश्वविद्यालय और बार-एट-लॉ (ग्रे'ज इन लंदन की डिग्रियां थीं जिससे वह अपने समय के सबसे शिक्षित भारतीय और एशियाई बन गए।

1935 में उन्हें सरकारी विधि कॉलेज का प्राचार्य नियुक्त किया गया। 1936 में उन्होंने स्वतंत्र श्रमिक पार्टी की स्थापना की जिसने 1937 के केंद्रीय विधान सभा चुनावों में 15 सीटें जीतीं। बाद में उन्हें संविधान प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर 1948 से मधुमेह से पीड़ित थे। जून 1954 से अक्टूबर 1954 तक वह नैदानिक अवसाद और कमजोर होती दृष्टि के कारण बिस्तर पर थे। 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली स्थित अपने घर में नींद में ही उनका निधन हो गया। उनकी स्मृति में उनके दिल्ली स्थित आवास 26 अलीपुर रोड पर एक स्मारक स्थापित किया गया है। अंबेडकर जयंती के रूप में उनका जन्मदिन सार्वजनिक अवकाश के रूप में मनाया जाता है। उनके सम्मान में कई सार्वजनिक संस्थानों के नाम रखे गए हैं जैसे डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी हैदराबाद और बी.आर. अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी मुजफ्फरपुर।

भारत लौटने पर उन्होंने बड़ौदा के राजकीय राज्य में रक्षा सचिव के रूप में कार्य किया। हालांकि उनका कार्यकाल आसान नहीं था क्योंकि उन्हें अछूत होने के कारण अपमानित और उपेक्षित किया गया। डॉ. अंबेडकर का जन्म 1891 में महार जाति में हुआ था जिसे ब्रिटिश सरकार ने निम्न वर्ग के गांव सेवक के रूप में देखा। बचपन से ही उन्होंने भेदभाव का सामना किया जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रित किया। उन्होंने लिखा स्कूल में जब अन्य जातियों के बच्चे प्यासे होते तो पानी के नल से पानी पी सकते थे। लेकिन मेरी स्थिति अलग थी। मैं नल को छू नहीं सकता था और जब तक कोई ऊंची जाति का व्यक्ति नल को खोलता नहीं मैं अपनी प्यास बुझा नहीं सकता था।

अंबेडकर ने अपनी महार जाति को गर्व महसूस कराया जब वह कॉलेज शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले युवक बने क्योंकि उस समय अछूतों को शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। बचपन से भेदभाव सहने के बावजूद उन्होंने आत्म विश्वास

नहीं खोया। हिंदू धर्म और उसकी जाति व्यवस्था की कड़ी आलोचना करने वाले अंबेडकर अपने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध धर्म अपनाने का निर्णय लिया। उन्होंने बौद्ध धर्म को उसकी नैतिकता ज्ञान और मानवता की रक्षा के लिए अपनाया।

उन्होंने सामाजिक सुधारों के लिए कई कदम उठाए। बहिष्कृत हितकारिणी सभा उनके द्वारा अछूतों के उत्थान के लिए किया गया पहला संगठित प्रयास था। इसके बाद उनके नेतृत्व में कई सार्वजनिक आंदोलन और रैलियां आयोजित की गईं जिनका उद्देश्य समाज में समानता लाना था। उन्होंने स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में कार्य किया और संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में नई भारतीय संविधान का निर्माण किया। उन्होंने संविधान में धर्म की स्वतंत्रता को परिभाषित किया और आरक्षण प्रणाली का निर्माण किया ताकि अछूतों और उनके सामाजिक-आर्थिक सुधार को सुनिश्चित किया जा सके।

उन्होंने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए भी काम किया। 1934 में भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना का आधार उनके द्वारा हिल्टन यंग कमीशन को प्रस्तुत किए गए विचारों पर आधारित था। डॉ. अंबेडकर अपने समय के प्रशिक्षित अर्थशास्त्री थे और उन्होंने अर्थशास्त्र पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने कहा था कि अंबेडकर अर्थशास्त्र में मेरे पिता हैं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर एक सच्चे स्व-निर्मित व्यक्ति थे जिन्होंने सभी बाधाओं का सामना कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया। उन्होंने अछूतों को समान अधिकार दिलाने और भारत में सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए अद्वितीय योगदान दिया।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर वास्तव में केवल दलितों के नेता नहीं थे बल्कि एक राष्ट्र निर्माता और वैश्विक नेता थे। उन्होंने सामाजिक न्याय के सिद्धांत दिए जो भारत की प्रारंभिक नींव को मजबूत करने में सहायक बने। बाबासाहेब उन महान विभूतियों में से एक हैं जिन्होंने स्वतंत्र भारत की कल्पना की और उसे साकार करने के लिए अथक प्रयास किया। उनके योगदान को याद करने के लिए अंबेडकर जयंती पूरे देश में विशेष रूप से उनके अनुयायियों द्वारा बड़े उत्साह के साथ मनाई जाती है।

डॉ. अंबेडकर जिन्हें आदरपूर्वक बाबासाहेब कहा जाता है भारतीय राजनीतिक सुधारक थे जिन्होंने अछूतों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय थे। महार समुदाय जो मुख्य रूप से महाराष्ट्र में पाए जाते हैं और लगभग 10% जनसंख्या का हिस्सा हैं से आने के कारण अंबेडकर को अपने प्रारंभिक जीवन में गहरे भेदभाव का सामना करना पड़ा।

ब्रिटिश भारतीय सेना में एक अधिकारी के रूप में उनके पिता ने अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिलाने के लिए संघर्ष किया। अंबेडकर को स्कूल में प्रवेश तो मिला लेकिन ब्राह्मणों और अन्य उच्च वर्गों के विरोध के कारण अछूतों को कक्षाओं में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। अपने लेख "नो पियून नो वाटर में अंबेडकर ने लिखा कि कैसे उन्हें स्कूल में चपरासी के बिना पानी तक नहीं लेने दिया जाता था। यह उस भेदभाव और बहिष्कार का उदाहरण था जिसका सामना अछूतों को अक्सर करना पड़ता था।

उनके पिता ने अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति प्रबल महत्वाकांक्षा रखी और उन्हें हिंदू ग्रंथों और अन्य साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। महार जाति में जन्म के कारण जो भेदभाव और अलगाव अंबेडकर ने सहा उसने उनके दृष्टिकोण और भारतीय समाज के प्रति राजनीतिक सोच को गहराई से प्रभावित किया।

बाबासाहेब का जीवन संघर्ष और प्रेरणा का प्रतीक है। उन्होंने भारत में समानता, सामाजिक न्याय और मानव गरिमा के लिए जो योगदान दिया वह उन्हें एक सच्चे राष्ट्र निर्माता और आदर्श नेता के रूप में स्थापित करता है।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर हमेशा से एक महान और प्रेरणादायक नेता रहे हैं जिन्होंने महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया। यह सर्वविदित है कि महिला सशक्तिकरण हमारे भारतीय समाज और यहां तक कि अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे समाज में महिलाओं के साथ अक्सर विभिन्न कारणों से भेदभाव किया जाता है लेकिन आधुनिकता और लोगों की बढ़ती सोच के कारण आज महिलाएं समाज के कई क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं।

डॉ. अंबेडकर ने हमेशा महिलाओं की शक्ति को पहचाना और उसका समर्थन किया। उन्होंने माना कि महिलाएं भी इस आधुनिक समाज का अभिन्न हिस्सा हैं और उन्हें समान अधिकार मिलना चाहिए। महिला सशक्तिकरण आधुनिक समाज के लिए बेहद आवश्यक है क्योंकि महिलाएं देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। डॉ. अंबेडकर ने यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास किया कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिए जाएं। उनके विचारों और प्रयासों से समाज में महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव आया और उनके लिए समानता और गरिमा सुनिश्चित हुई। वास्तव में महिला सशक्तिकरण न केवल हमारे समाज के विकास के लिए आवश्यक है बल्कि यह एक ऐसा मार्ग है जो समाज को अधिक प्रगतिशील और समावेशी बना सकता है।

गुरुवार 14 अप्रैल 2016 डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की 125वीं जयंती के रूप में मनाई गई। डॉ. अंबेडकर को भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता और दलित अधिकारों के चैंपियन के रूप में जाना जाता है। उन्होंने स्वतंत्र भारत के पहले कानून और न्याय मंत्री के रूप में 1947 से 1951 तक अपनी सेवाएं दीं।

डॉ. अंबेडकर ने अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए अछूत कल्याण समिति का गठन किया और तथाकथित अछूतों को संगठित कर उनके लिए अपने संघर्ष की शुरुआत की। उन्होंने समाज के इस वंचित वर्ग को जागरूक किया और उन्हें एक सम्मानजनक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। चवदार तालाब पर सत्याग्रह उनका एक बड़ा कदम था जिसके माध्यम से उन्होंने दलितों के लिए पानी लेने का अधिकार सुनिश्चित किया।

डॉ. अंबेडकर ने समाज के पिछड़े वर्गों के जीवन में सुधार लाने के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने स्वतंत्र मजदूर दल के बैनर तले मजदूरों को संगठित किया और उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ी। उनकी लोकप्रियता और प्रभाव के कारण स्वतंत्र मजदूर दल ने बंबई में हुए चुनावों में सभी 15 सीटों पर जीत हासिल की। इससे डॉ. अंबेडकर दलितों के मसीहा और उनके नायक बन गए।

उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद से बहुत दुखी होकर अपने जीवन के अंतिम चरण में बौद्ध धर्म अपना लिया। उनकी गहन अध्ययनशीलता ने उन्हें विश्व के विभिन्न संविधानों के अच्छे बिंदुओंको आत्मसात करने का अवसर दिया जिन्हें उन्होंने भारतीय संविधान में शामिल किया। उन्हें सही मायने में 'भारतीय संविधान का निर्माता कहा जाता है।

स्वतंत्रता के बाद उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बनाया गया। डॉ. अंबेडकर का जीवन सामाजिक भेदभाव और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष में समर्पित रहा। उनकी मृत्यु 6 दिसंबर 1956 को हुई। उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर साथ ही नागपुर में 14 अक्टूबर को धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस पर लाखों लोग मुंबई स्थित उनके स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित करने एकत्रित होते हैं। डॉ. अंबेडकर को एक भारतीय राष्ट्रवादी न्यायविद दलित नेता बौद्ध पुनरुद्धारक और भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार के रूप में याद किया जाता है।

उनका संदेश था शिक्षित बनो! संगठित रहो! और संघर्ष करो!

संदर्भ:

1. अंबेडकर, बी. आर. (1990)अछूत वे कौन थे और वे अछूत क्यों बने? डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर लेख और भाषण. खंड 7 मुंबई महाराष्ट्र सरकार।
2. भट्टाचार्य जे. एन. (1896) हिंदू जातियाँ और संप्रदाय हिंदू जाति की उत्पत्ति की व्याख्या। कोलकाता ठाकर स्पिंक एंड कंपनी।
3. चक्रवर्ती एस. (1999) भारत में सामाजिक आंदोलनों की आलोचना। नई दिल्ली भारतीय सामाजिक संस्थान।
4. डिर्क्स एन. (2001) मनोवृत्तियों की जातियाँ उपनिवेशवाद और आधुनिक भारत का निर्माण। प्रिंसटन एनजे प्रिंसटन विश्वविद्यालय प्रेस।
5. फॉयरएकर जे. (1995) सामाजिक आंदोलनों का सिद्धांत। लंदन प्लूटो प्रेस।
6. गुप्ता ए. आर. (1984) जाति पदानुक्रम और सामाजिक परिवर्तन। नई दिल्ली ज्योत्सना प्रकाशन।
7. हार्पर ई. पी. (1964) जाति और धर्म के एकीकरण के रूप में संस्कार अपवित्रता। दक्षिण एशिया में धर्म में। सिएटल यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस।
8. आयर के. (1989) सामाजिक लोकतंत्र और दलित समानता। मद्रास विश्वविद्यालय ऑफ मद्रास।
9. जैकब टी. जी. & प. बंधु. (2002) जाति प्रश्न पर विचार दक्षिण भारत में दलित स्थिति। बैंगलोर नेसा।
10. कुमार एस. (2007) 15 मई मैन्युअल स्कैवेंजर एक्ट को अपनाने की सलाह मानवाधिकार आयोग राज्यों को बताता है। डाउन टू अर्थ। नई दिल्ली।
11. लारबीर एम. पी. (2003) अंबेडकर और धर्म - एक मुक्ति दृष्टिकोण। नई दिल्ली आईएसपीसीके।
12. नेसफील्ड जे. सी. (1985) उत्तर पश्चिमी प्रांतों और कूच के जाति व्यवस्था का संक्षिप्त अवलोकन। इलाहाबाद।
13. ऊम्मेन टी. के. (2004) राष्ट्र नागरिक समाज और सामाजिक आंदोलन। नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन्स।
14. पारदीप. (2008 19) जुलाई स्कूल. शौचालय या मंदिर 20 जनवरी 2011 को प्राप्त http://www.countercurrents.org से।
15. रोसन्हान एल. डी. & सेलिगमैन एम. (1989) असामान्य मानसिकता। दूसरी संस्करण। न्यू यॉर्क डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी।
16. सहाय के. एन. (1975) अछूतता और जाति व्यवस्था का उन्मूलन। रांची समाजिक शोध पत्रिका, खंड XVIII, संख्या 2।
17. ट्रिब्यून न्यूज सर्विस. (2011 19) अप्रैल मैनहोल में जहरीली गैस से दो सफाईकर्मियों की मौत। चंडीगढ़।
18. संयुक्त राष्ट्र. (1985) संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प 40/34, 29 नवंबर 1985